पहलवान की ढोलक

- फणीश्वरनाथ रेणु

1. कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में ----- शब्द दीजिए।

उत्तर- कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में गहरा तालमेल था। विपक्षी चाँद सिंह के गाँव के सारे लोग प्रोत्साहित करने में लगे थे। वहीं दूसरी तरफ लुट्टन के साथ उसके पक्ष में ढोल की आवाज थी जिसकी ताल पर वह अपनी शक्ति और दाँव-पेंच की परीक्षा ले रहा था। ढोल की ताल और लुट्टन के दाँव-पेंच में निम्नलिखित तालमेल था-

चटधा गिड़धा, चटधा गिड़धा- आजा भिड़जा, आजा भिड़जा।

चट गिड़धा चट गिड़धा- मत डरना, मत डरना।

धाक धिना तिरकट तिना- दाँव काटो, बाहर हो जा।

चटाक चट धा- उठा पटक दे।

धिन धिना, धिक धिना- चित करो, चित करो।

धा गिड़गिड़, धा गिड़गिड़- वाह! बहादुर, वाह! बहादुर।

उपर्युक्त शब्द मन में उत्साह और आँखों के सामने दंगल का दृश्य जीवन्त कर देते हैं।

2. कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर- कहानी में लुट्टन के जीवन में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देता है-

(i) बालपन में अनाथ लुट्टन का पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया।

(ii) श्यामनगर दंगल में चाँद सिंह को पराजित कर के राज दरबार का पहलवान बन गया और मजकी जीवन बिताने लगा।

(iii) राजा साहब की मृत्यु के बाद राजकुमार द्वारा दरबारी परिवर्तन के शिकार लुट्टन को विवश होकर गाँव जाना पड़ा।

(iv) गाँव के युवाओं को पहलवानी सिखाने का दायित्व लुट्टन ने ले लिया था परंतु आर्थिक तंगी के कारण असमय ही उसे अखाड़ा बंद करना पड़ा।

(v) गाँव में फैले महामारी में जब लुट्टन सिंह के दोनों बेटे मौत का शिकार हो गए तब लुट्टन पहलवान भी कुछ समय पश्चात मृत्यु को प्राप्त हो गया।

3. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

उत्तर- माता-पिता की मृत्यु के पश्चात लुट्टन का पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया, जिसे गाँव वाले तरह-तरह के ताने देते थे। उन लोगों के इस तरह के व्यवहार को देखकर लुट्टन सिंह बदला लेने के लिए कुश्ती के दाँव-पेंच को सीखने लगा। उसे पहलवानी के दाँव-पेंच सिखाने वाला कोई गुरु नहीं था, इसलिए वह ढोल की आवाज को गुरु मानकर उसके शब्दों के उतार-चढ़ाव पर पैंतरा बदलने लगा। उसे लगता कि ढोल की आवाज शत्रु को पटकने, चित करने तथा उसपर विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित

कर रहा है, इसलिए वह अपने बच्चों को भी ढोल की आवाज को आदर्श मानकर उसका अनुसरण करने को कहता। इस तरह हम कह सकते हैं कि पहलवान का ~~वास्तविक~~ वास्तविक गुरु ढोल की आवाज थी।

4. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर- लुट्टन अपने बेटों के देहांत के बाद भी ढोल बजता रहा ताकि इस महामारी से शिकार लोगों को हिम्मत मिल सके क्योंकि पूरे गाँव में हैजा तथा मलेरिया के कारण हाहाकार मचा हुआ था। प्रत्येक घर से लाशें उठ रही थीं। रात्रि का सन्नाटा लोगों के आत्मबल को पूरी तरह से तोड़ दे रहा था। इस विभीषिका को तोड़ने का अदम्य साहस केवल पहलवान की ढोलक में था। जब उसके बेटे महामारी के शिकार हुए तो उन्होंने अपने बाबा से इतना ही कहा, "बाबा! उठा पटक वाला ताल बजाओ!"

इसी कारण वह अपने बेटों के मृत्यु के पश्चात भी लोगों के अंदर जीवन की संजीवनी भरने के लिए ढोल बजाता रहा।

5. ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता है?

उत्तर- ढोलक की आवाज ~~स~~ रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती जान पड़ती थी। संध्या हो या सुबह पहलवान की ढोलक चाहे जिस ख्याल से बजती हो पर एक बात तो तय थी ~~कि~~ कि गाँव के अर्धमृत, औषधीय उपचार पथ्य विहीन ग्रामीणों में संजीवनी भरने का काम करती थी। ढोलक की आवाज नर-नारी सभी को जीवन्त करती थी, उनके बेजान शरीर में

बिजली दौड़ जाती। ढोल की आवाज में महामारी के
दूर करने की ताकत न हो, पर इतना तो जरूर
था कि मरते हुए ग्रामीणों को आँखें बंद करते
समय कोई कष्ट नहीं होता था।